# ''यरूशलेम से लेकर''
# ( 2:1-13 )

बाइबल के कई अध्याय इतने महान हैं कि वे अपनी महानता को दिखाने के लिए हमारी योग्यता को ललकारते हैं। उनमें से कुछ ये हैं: उत्पत्ति 1, यशायाह 53, रोमियों 8, 1 कुरिन्थियों 15, और इब्रानियों 11. प्रेरितों के काम 2 भी एक महान अध्याय है। इस एक अध्याय पर आधारित *द हॅब ऑफ़ द बाइबल* शीर्षक से एक सज़्पूर्ण पुस्तक है।

प्रेरितों के काम 2 अध्याय हमें मसीह के पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के बारे में बताता है। इसमें इस बात का चित्रण है कि उत्सव के उस दिन (और उसके तुरन्त बाद): कलीसिया की स्थापना हुई, सुसमाचार का प्रचार पूरे ज़ोर से पहली बार सुनाया गया, और मानवता का एक नया वर्ग अस्तित्व में आया जिसे मसीही करके जाना जाने लगा (11:26)। वह दिन परमेश्वर की उन सनातन योजनाओं और उद्देश्यों के पूरा होने की घोषणा थी (इफिसियों 3:10, 11)।

उस दिन की घटनाओं का अध्ययन करते हुए, आइये हम अपना ध्यान यशायाह 2 में सबसे पहले कही गई कुछ मुज़्य बातों पर लगाएं। इस अध्याय में मसीह के राज्य की स्थापना के विषय में कहा गया है: ''*अन्त के दिनों में* ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा ...'' (पद 2)। यशायाह ने कहा था कि ''*हर जाति के लोग* धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे'' (पद 2) और फिर उसने कहा, ''क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन *यरूशलेम से* निकलेगा'' (पद 3)।

पुनरुत्थान के पश्चात अपने चेलों के साथ बात करते हुए यीशु ने यशायाह की ही शब्दावली का प्रयोग किया:

> यों लिखा है; कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा और *यरूशलेम से लेकर सब जातियों* में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा (लूका 24:46, 47)।[1]

यीशु ने स्वर्गारोहण से कुछ समय पहले, अपने प्रेरितों को आज्ञा दी कि वे पवित्र आत्मा के वायदे की प्रतीक्षा *यरूशलेम* में ठहरकर करें (1:4,5)। उसने ज़ोर देकर कहा कि वे *यरूशलेम* से लेकर ''पृथ्वी के छोर तक'' उसके गवाह बनेंगे (1:8)। उसके स्वर्गारोहण के बाद, चेले *यरूशलेम* में चले गए (लूका 24:52, 53; प्रेरितों 1:12, 13) और जब वे वहां प्रतीक्षा कर रहे थे तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा (2:1-4)।

प्रेरितों 11 में पतरस ने ज़ोर दिया कि प्रेरितों अध्याय 2 की घटनाएं ''आरज़्भ'' थीं। कुरनेलियुस के घर की घटना के बारे में बताते हुए उसने कहा, ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से *आर भ में* हम पर उतरा था'' (11:15)। यह स्पष्ट है कि पिन्तेकुस्त का दिन यरूशलेम में आरज़्भ का दिन था। इस पाठ में हम अध्याय 2 की ही समीक्षा करके देखेंगे कि यशायाह, यीशु और अन्यों द्वारा कही गई बातें किस प्रकार नाटकीय ढंग से पूरी हुईं।

आइये, पहले उस दृश्य पर ध्यान दें जिसमें यह घटना घटी। पिन्तेकुस्त का दिन यहूदियों के तीन मुज़्य त्यौहारों - फसह (अप्रैल के मध्य में), पिन्तेकुस्त (जून के आरज़्भ में), और तज़्बुओं के पर्व (अक्तूबर में) में से एक था।[2]

पुराने नियम में पिन्तेकुस्त को कई नामों से जाना जाता था: अठवारों[3] का पर्व (क्योंकि यह फसल की कटाई के पूरा होने पर मनाया जाता था); और बटोरन का पर्व (निर्गमन 23:16; गिनती 28:26) (क्योंकि इस दिन वे गेहूं की फसल का पहला भाग भेंट चढ़ाते थे)।[4] सिकन्दर महान की विजयों के बाद यूनानी भाषा का काफी विस्तार हुआ था। इस शब्द को यूनानी शब्द ''पिन्तेकुस्त''[5] के नाम से जाना जाने लगा, जिसका अर्थ है ''पचासवां।''[6] इससे यह पता चलता है कि यह पर्व फसह के पचास दिन के बाद मनाया जाता था।[7]

क्योंकि यहूदी युवाओं को इन पर्वों पर यरूशलेम आना होता था,[8] इसलिए सारे संसार से ही यहूदी लोग यहां आते थे। परमेश्वर ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए फसह के पर्व को चुना, जब यरूशलेम में यहूदी जगह-जगह से पहुंचते थे। इसके बाद परमेश्वर ने अपने राज्य की स्थापना और जी उठे प्रभु के सुसमाचार के प्रचार का प्रारज़्भ करने के लिए, अगले महान पर्व को चुना जो कि पिन्तेकुस्त था। जून में यात्रा करना आसान होने के कारण, अब तक और यहूदी भी वहां जमा हो चुके होंगे।

पिन्तेकुस्त का पर्व आराम और जश्न का पर्व था। विशाल भीड़ रंग-बिरंगे कपड़े पहने यरूशलेम की तंग गलियों में घूम फिर कर छुट्टी का मज़ा ले रही होगी। इसी दृश्य के साथ अध्याय 2 का आरज़्भ होता है।

## राज्य/कलीसिया का आर भ (2:1-4)

यशायाह ने कहा था कि ''अन्त के दिनों में'' सिय्योन अर्थात यरूशलेम में ''यहोवा के भवन'' की स्थापना होगी (यशायाह 2:2, 3)। बाद में पौलुस ने कलीसिया को परमेश्वर का घर कहा (1 तीमुथियुस 3:15)। पृथ्वी पर रहते हुए, प्रभु यीशु ने इस ईश्वरीय संस्थान को अक्सर ''राज्य'' कहा, यद्यपि, मत्ती में उसने राज्य की पहचान कलीसिया के रूप में करवाई (मत्ती 16:18, 19)।[9] यीशु ने ज़ोर देकर कहा था कि यह राज्य/कलीसिया, उसके स्वर्ग में जाने के बाद ''सामर्थ के साथ'' (मरकुस 9:1) आएगा; उसने अपने स्वर्गारोहण से कुछ समय पहले ही प्रेरितों को बताया था कि जब पवित्र आत्मा उन पर आएगा तो वे सामर्थ पाएंगे (1:8)। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में वह सामर्थ बड़े नाटकीय

ढंग से आई:

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें[10] फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। *और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए* और *जिस प्रकार आत्मा* ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे (पद 1-4)।

कितना रोमांचक होगा यह दृश्य! आकाश से बड़ी ''आंधी की सनसनाहट का सा शब्द'' सुनाई दिया। यह वास्तव में आंधी नहीं थी- हवा में कोई फर्क नहीं पड़ा था- किन्तु बड़ी ज़ोर की आंधी जैसी आवाज़ आई। एक अद्‌भुत नज़ारा था वह: ''आग की सी जीभें'' फटीं और पवित्र आत्मा पाने वालों के सिरों पर ठहर गईं। वहां कोई वास्तविक आग नहीं थी अर्थात यह वह ''आग का बपतिस्मा'' नहीं है जिसकी बात यूहन्ना ने की थी[11] - बल्कि यह केवल आग जैसा दृश्य था। फिर, जो पवित्र आत्मा से भर गए थे ''वे अन्य-अन्य भाषाएं बोलने लगे।'' यहां ''भाषा'' शब्द यूनानी शब्द ग्लौसा[12] के बहुवचन का अनुवाद है। इस शब्द का अर्थ बड़बड़ाना या अनाप-शनाप बोलना नहीं,[13] बल्कि उस समय की समसामयिक *भाषाएं* हैं। ''उनमें से प्रत्येक को यही सुनाई देता था कि ये *मेरी ही भाषा* में बोल रहे हैं''; ''हम में से हर एक *अपनी-अपनी जन्मभूमि की भाषा* सुनता है'' (पद 6, 8)।[14]

पद 11 प्रेरितों द्वारा अन्य-अन्य भाषा बोलने की विषय-वस्तु को ''परमेश्वर के बड़े कामों की चर्चा'' कहता है। सम्भवत: यह इस्राएल में परमेश्वर के कामों को दोहराए जाने की बात है- जिसमें मूसा से लेकर दाऊद और भविष्यवक्ताओं के इतिहास पर एक नज़र डाली गई[15] (इसमें मसीह के बारे में की गई भविष्यवाणियों को भी याद करवाया गया होगा)। कोई भी दूसरा विषय इतना प्रभावशाली नहीं हो सकता था, जिससे पतरस के संदेश के तुरन्त बाद लोगों के मन बदल जाते।

जिस समय परमेश्वर ने दस आज्ञाएं दी थीं, तो धरती कांपी, बादल गरजे, और बिजली चमकी थी, और समस्त पर्वत धुएं से भर गया था (निर्गमन 19:18)। जब परमेश्वर ने मनुष्य को अपना नया नियम दिया तो फिर अपनी सामर्थ से उसने *आवाज़* (आंधी की), *संकेत* (आग का) और (अन्य भाषा बोलने का) *चिह्न*, देकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया!

यीशु ने कहा था कि *पवित्र आत्मा* के आने पर, *सामर्थ* भी आएगी - और सामर्थ के साथ *राज्य* भी आएगा। इस प्रकार प्रतिज्ञा किए हुए राज्य का आरम्भ प्रेरितों के काम 2 अध्याय में हो गया! तब से ही राज्य/कलीसिया के अस्तित्व की बात कही जाती है (5:11; कुलुस्सियों 1:13; इत्यादि)।[16]

कइयों के लिए इस तथ्य को मानना कठिन (शायद उबाऊ भी) हो सकता है कि राज्य की स्थापना प्रेरितों 2 में हो चुकी है। उस दृश्य को सराहने के लिए कि वह कितना रोमांचकारी होगा, कल्पना कीजिए कि आप एक यहूदी श्रद्धालु हैं, उम्रभर आप यही सपना

देखते रहे कि मसीह का आने वाला राज्य कब स्थापित हो। आपके पिता भी उस राज्य की बाट जोहते सारा जीवन इस राज्य के आने के लिए प्रार्थनाएं करते रहे और उनके पूर्वज और पूर्वजों के भी पूर्वज सदियों से इसी की राह देख रहे थे। एक यहूदी के मन में मसीह के राज्य की स्थापना उतनी ही भावपूर्ण थी, जितना हमारे लिए मसीह का दोबारा आना।

## प्रेरिताई की सामर्थ का आर भ (2:1-13)

राज्य/कलीसिया की स्थापना के अलावा प्रेरितों के काम 2 *की* पहली आयतें हमें प्रेरिताई की शक्ति के आरज़्भ के बारे में बताती हैं।

यीशु ने प्रेरितों के साथ वायदा किया था कि पवित्र आत्मा के उन पर आने पर (1:5, 8) उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और *''सामर्थ''* मिलेगी। ''बपतिस्मा'' शब्द का अक्षरश: अर्थ ''डुबोना'' है। प्रेरितों को पवित्र आत्मा की सामर्थ में *डुबोया* गया। नश्वर मनुष्यों को मिलने वाले पवित्र आत्मा के माप का सबसे अधिक माप प्रेरितों को मिला। उनके द्वारा आत्मा की प्रेरणा से किए गए प्रचार के अलावा, हम अगले अध्यायों में देखेंगे कि उन्होंने आत्मा की प्रेरणा से केवल प्रचार ही नहीं किया बल्कि रोगियों को भी चंगा किया, भूतों को निकाला और मुर्दों को भी जिलाया (5:12-16; 9:36-41)।

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि 1:15 में जिन 120 लोगों का उल्लेख है, उन सब को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला (इसके लिए वे 2:1 में ''वे '' का अर्थ 120 बताते हैं), परन्तु पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है।[17] ध्यान दीजिए: (1) प्रेरितों 1 अध्याय में यीशु ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने का वायदा केवल प्रेरितों के साथ ही किया (1:2, 4, 5)। (2) 2:1 में ''वे'' शब्द से पहले 1:26 में शब्द ''प्रेरितों'' आता है (मूल शास्त्र को अध्यायों और आयतों में नहीं बांटा गया था)। (3) जितने भी पवित्र आत्मा से भरे, वे सभी अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे थे (2:4), परन्तु बोलने वाले गलीली पुरुष ही थे (2:7)। सभी प्रेरित गलील के रहने वाले थे, परन्तु 120 लोगों में सभी गलीली नहीं थे।[18] (4) जितने पवित्र आत्मा से भरे थे, उन पर शराबी होने का आरोप लगाया गया था (2:13), परन्तु पतरस, ''उन ग्यारह [अर्थात *प्रेरितों*] के साथ खड़ा हुआ'' और कहने लगा कि ''ये नशे में नहीं हैं'' (2:15)। (5) 2:37 में केवल प्रेरितों को सज़्बोधित किया गया, जिससे पता चलता है कि बोलने वाले केवल वही थे। (6) जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, उनको अन्य भाषाएं बोलने की चमत्कारिक शक्ति दी गई (2:4), परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले अध्यायों में केवल प्रेरितों के पास ही आश्चर्यकर्म करने की शक्ति बताई गई है (2:43; 4:33; 5:12)। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि 2:1-4 में, हमें *प्रेरिताई* की सामर्थ के आरज़्भ का पता चलता है।

उस सामर्थ का प्रदर्शन करने के कई उद्देश्य थे। पहला, इसने प्रेरितों में न केवल शक्ति बल्कि साहस भी भर दिया। (शायद यीशु प्रेरितों पर यह प्रमाणित करना चाहता था कि वे सचमुच ही सुसमाचार को ''पृथ्वी की छोर तक'' ले जा सकते हैं। ''आकाश के नीचे'' के हर देश से आए प्रतिनिधि वहां थे, और प्रेरितों ने पाया कि परमेश्वर की सहायता से, वे उनके

साथ बात कर सकते थे, प्रचार कर सकते थे, और संसार के सभी कोनों से आए लोगों को परिवर्तित कर सकते थे!) दूसरा, सामर्थ के इस प्रदर्शन ने यरूशलेम के सब रहने वालों को आकर्षित किया और सच्चाई को स्वीकार करने के लिए उनके मनों को तैयार किया।

आयत 2 से पता चलता है कि ''... बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।'' सम्भव है कि यह ''घर'' वही ''अटारी'' (1:13) हो, किन्तु यह भी हो सकता है कि मन्दिर को ही घर कहा गया हो।[19] प्रेरित वायदे को पाने की प्रतीक्षा में, ''लगातार *मन्दिर* में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे'' (लूका 24:53)। भीड़ का ध्यान खींचने के लिए मौत के से सन्नाटे[20] के बीच मन्दिर में बड़ी आंधी की गर्ज से भरने ... या भीड़ में खड़े हो सकने के लिए उन बारह में से हर एक के सिर पर आग की सी जीभों के उतरने ... या ''परमेश्वर के बड़े कामों'' का प्रचार वहां उपस्थित लोगों की स्थानीय भाषा में करने के अलावा और प्रभावशाली ढंग क्या हो सकता था!

पद 5 से 12 बताते हैं कि सुनने वालों पर इसका क्या असर हुआ: वे ''घबरा गए'' (पद 6)। ''वे सब चकित और अचम्भित'' हो गए (पद 7)। ''वे सब चकित हुए, और घबरा'' (पद 12) गए।

इस भाग का आरम्भ होता है, ''और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी[21] यरूशलेम में रहते थे।'' ज़रूरी नहीं कि ''रहते थे'' का अर्थ उनका स्थायी निवास यरूशलेम ही हो। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि वे वहां रह रहे थे।[22] क्योंकि लोग हज़ारों मील चल कर वहां आते थे, और फसह और पिन्तेकुस्त में दो महीने से भी कम समय का अन्तर था, इसलिए यात्री आम तौर पर दोनों त्यौहार यरूशलेम में ही रहकर मनाते थे।''

''जब वह शब्द हुआ (सम्भवत: आंधी का शोर[23]) तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं'' (पद 6)। लूका हमें उनके बैठने की तरतीब के बारे में नहीं बताता, परन्तु सम्भवत: प्रेरितों ने अन्यजातियों के आंगन में अलग-अलग भागों में स्थान लेकर बोलना आरम्भ किया होगा। क्योंकि वहां बारह से अधिक देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग उपस्थित थे,[24] इसलिए कम से कम एक (और सम्भवत: सभी) प्रेरितों के लिए एक से अधिक भाषा में बोलना आवश्यक था।

''और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे: देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?'' (पद 7)। लोग जानते थे कि वे गलीली हैं क्योंकि गलीलियों के उच्चारण से उनकी पहचान हो जाती थी[25] (दूसरे यहूदियों को उसकी भाषा रूखी लगती थी)। गलील का इलाका सांस्कृतिक तौर पर पिछड़ा और अनपढ़ों से भरा हुआ था (4:13)। जब इन गलीलियों ने हर भाषा बड़ी सहजता से बोली, तो वहां इकट्ठी हुई भीड़ चकित रह गई।

''तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी-अपनी जन्मभूमि की भाषा[26] सुनता है?'' (पद 8)।[27] यहूदी लोग अत्याचार से बचने के लिए या फिर आर्थिक विवशताओं के कारण

पूरे संसार में बिखरे हुए थे। इन बिखर चुके लोगों में अधिकतर लोग कम से कम तीन भाषाएं जानते थे: उनकी अपनी भाषा (इब्रानी व अरामी[28]), कोयनि[29] यूनानी (उस समय की विश्वव्यापी भाषा), और उस देश की भाषा जहां वे रहते थे। इसी भाषा को सुनकर ही वे बोल उठे थे, ''... अपनी-अपनी जन्मभूमि की भाषा।''

लूका ने पन्द्रह इलाकों और देशों का उल्लेख किया है जो पूर्व (बाबुल और फारस) से पश्चिम (उत्तरी अफ्रीका और रोम) तक फैले हुए थे:

> ''पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आसपास हैं, इन सब देशों के रहने वाले और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी मत धारण करने वाले[30] क्रेती और अरबी भी हैं। परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उन से परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं''[31] और वे सब चकित हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? (पद 9-12)।[32]

पद 12 में वहां उपस्थित लोगों के बारे में कहा गया है कि उनमें से बहुत से लोग ''चकित हुए और घबराकर'' इकट्ठे हो गए थे। मनुष्य के स्वभाव के अनुसार उस भीड़ में कुछ नास्तिक भी होंगे। इसीलिए आयत 13 में हम पढ़ते हैं ''परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा कि 'ये तो नई मदिरा के नशे में हैं।' ''[33] उन्होंने ठट्ठे में यह कहा था। शराबी की भाषा कभी स्पष्ट समझ नहीं आती, परन्तु उनके इन शब्दों ने पतरस को विवश किया कि वह उनको उत्तर दे।

## सारांश

प्रेरितों के काम 2 के इस अध्याय पर अगले पाठ में हम पतरस के उस प्रभावशाली प्रवचन का अध्ययन करेंगे जो 14 से 36 आयतों में दर्ज है।

इस पाठ को समाप्त करते हुए, हम अपने आप से यह पूछ सकते हैं कि पिन्तेकुस्त वाले दिन के श्रोताओं में से हम किस श्रेणी में आते हैं: उनमें जो चकित होकर घबरा उठे या उपहासात्मक ठट्ठा करने वालों में। मुझे नहीं लगता कि ठट्ठा करने वालों में से भी कोई उद्धार प्राप्त करने वाले उन तीन हज़ार में शामिल हुआ होगा। वचन के प्रति आपका व्यवहार ही आपके अनन्त निवास को तय करेगा।

## प्रवचन नोट्स

बहुत से टीकाकारों का मानना है कि प्रेरितों के काम 2 में बाबुल का श्राप फिर दोहराया गया। उत्पत्ति 11 में मनुष्य को बहुत सी भाषाएं देकर श्राप दिया गया और वे तितर-बितर हो गए थे। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में बहुत सी भाषाएं बोलने वाले लोग इकट्ठे हुए और

उनको आशीष मिली। कई तुलनाएं की जा सकती हैं: उत्पत्ति 11 में लोगों ने अपने को ऊंचा करने का प्रयत्न किया; प्रेरितों 2 में परमेश्वर की महिमा हुई। उत्पत्ति 11 में लोग एक दूसरे की बात समझ नहीं पा रहे थे; प्रेरितों 2 में समझ रहे थे। उत्पत्ति 11 में विद्रोह की झलक है; प्रेरितों 2 में आज्ञाकारिता की तस्वीर मिलती है।

यरूशलेम के विनाश के बाद, यहूदियों ने पिन्तेकुस्त का त्यौहार उसी तरह मनाना शुरू कर दिया जैसे कि मूसा ने सीनै पर्वत पर व्यवस्था दी थी (निर्गमन 20)। इन दो अवसरों की और कई दिलचस्प तुलनाएं की जा सकती हैं: पहाड़ पर से व्यवस्था का फसह के लगभग पचास दिन बाद दिया जाना; फसह के पर्व के समय यीशु की मृत्यु के पचास दिन बाद उसके सुसमाचार के प्रचार का आरज़्भ। दोनों अवसरों पर परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति अद्भुत चिह्नों के द्वारा प्रकट की। व्यवस्था देने के समय तीन हज़ार लोग मारे गए थे (निर्गमन 32:28) और सुसमाचार के प्रचार से तीन हज़ार लोगों को नया जन्म मिला था (प्रेरितों 2:41)। व्यवस्था दिए जाने के समय भय था (निर्गमन 9:16); जब सुसमाचार का प्रचार किया गया तो आनन्द था (प्रेरितों 2:46)। पिन्तेकुस्त के दिन को ''बटोरन का पर्व'' कहा जाता था; प्रेरितों 2 में आत्मिक बीज का जो कि परमेश्वर का वचन है, प्रथम फल मिला (लूका 8:11)। इससे एक दिलचस्प पाठ तैयार हो सकता है। और बातों के साथ, मिसर की दासता और निर्गमन की पुस्तक में व्यवस्था दिए जाने के लगभग पचास दिनों के समय, और पुरानी वाचा के अन्त होने (यीशु की मृत्यु के साथ; कुलुस्सियों 2:14) और प्रेरितों 2 में नई वाचा के प्रकाश होने के बीच के समयों में काफी समानताएं हैं। (इसकी तुलना किसी व्यक्ति की मृत्यु और उसकी वसीयत के पढ़े जाने के अन्तराल से की जा सकती है, वैधानिक दृष्टिकोण से, किसी व्यक्ति की वसीयत तभी लागू होती है जब वह मर जाता है; व्यावहारिक दृष्टिकोण से, उसकी वसीयत तभी लागू होती है जब वसीयत की शर्तें पता चलें)।

---

पादटिप्पणियां

[1]पाठ के शीर्षक के लिए हिन्दी बाइबल के शब्दों का प्रयोग किया गया है। [2]2 इतिहास 8:12, 13. और भी कई ''छोटे'' पर्व थे, जैसे पूरीम का त्यौहार (एस्तेर 9:29-32)। [3]निर्गमन 34:22; गिनती 28:26; व्यवस्थाविवरण 16:10; 2 इतिहास 8:13 । [4]निर्गमन 34:22 । उस समय के अति महत्वपूर्ण समारोहों में दो रोटियों की भेंट चढ़ाने का दिन भी एक था। [5]पुराने नियम में इस त्यौहार को पिन्तेकुस्त कभी नहीं कहा गया। 2 मक्काबी में इसे इसी नाम से पुकारा गया है जो कि पुराने और नये नियम के बीच की आत्मा की प्रेरणा रहित पुस्तकों में से एक है। इस पर्व को नये नियम में तीन बार पिन्तेकुस्त कहा गया है: प्रेरितों 2:1; 20:16; 1 कुरिन्थियों 16:8 । [6]पिन्ते यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ''पांच,'' पिन्तेकोन्ता ''पचास'' को कहा जाता है और पिन्तेकोस्तोस का अर्थ है ''पचासवां।'' 2:1 में प्रयुक्त शब्द पिन्तेकोस्तस है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''पचासवें का।'' [7]लैव्यव्यवस्था 23:16. बाद के वर्षों में, यहूदी लोग सीनै पर्वत पर व्यवस्था के दिए जाने को इसी पर्व पर मनाने लगे। उनका मानना था कि निर्गमन 19:1 के अनुसार, मिस्र में प्रथम फसह के लगभग पचास दिन बाद उनको व्यवस्था मिली। बाद के वर्षों में, धर्म-त्याग करने वाली कलीसिया ने कई ''विशेष पवित्र दिन'' बना दिए, उसने पिन्तेकुस्त के दिन को भी ''व्हाइट सण्डे''

(श्वेत रविवार) या ''व्हाइट सनटाइड'' (व्हाइट सण्डे टाइड) कहकर मनाना आरम्भ कर दिया। उस दिन वे सफेद कपड़े पहनते और बपतिस्मा पाने की चाह रखते थे। नया नियम ऐसे किसी दिन को मनाने की अनुमति नहीं देता (गलतियों 4:9-11)। [8]निर्गमन 34:23. प्रेरितों 2 की घटना के समय तक यहूदी लोग सारी पृथ्वी में फैल चुके थे। यहूदी शिक्षकों का आदेश था कि यदि कोई यहूदी *नब्बे दिन की यात्रा के फासले में* रहता हो, तो वह इन पर्वों में शामिल होना चाहिए। [9]यीशु ने मत्ती 16:18, 19 में ''राज्य'' और ''कलीसिया'' शब्दों को अदल-बदल कर प्रयोग किया। [10]यूनानी में यहां बहुवचन रूप ग्लौसा (*glossa*) है। ग्लौसा को मुंह की मांसपेशी या उससे निकलने वाली आवाज़ कहा जा सकता है। इस भाग में शब्दों का खेल है। जीभें (ज़बानें) प्रेरितों पर ठहर गईं; फिर वे ज़बानें (अन्य-अन्य भाषा) बोलने लगे।

[11]''आग का बपतिस्मा'' बुरे लोगों के लिए नरक में मिलने वाले दण्ड को कहा गया है। [12]आज अंग्रेज़ी के इस शब्द के लिए हम ''glossary (शब्दावली)'' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिससे यह पता चलता है कि इन ''शब्दों की व्याख्या'' की आवश्यकता है। ज़बानें बोलने को कई बार ग्लोसेलेलिया कहा जाता है, जिसका अक्षरश: अर्थ ''बोलियां बोलना'' है। अगले एक भाग में ''बोलियां बोलना'' पर अतिरिक्त लेख दिया जाएगा। [13]उन दिनों, जो लोग अन्य देवताओं के लिए बोलने का दावा करते थे, वे कभी-कभी बड़बड़ या अनाप-शनाप बोलने लग जाते थे। उनका दावा था कि यह ''देवताओं की भाषा'' है और यह कि देवता उनके द्वारा बात करते हैं। इस ''रहस्यमय'' बकवास को ''भावविभोर बोली'' कहा जाता था। प्रेरितों ने ऐसा नहीं किया था। [14]बहुतेरे जो आज ''बोलियां बोलने'' का दावा करते हैं, वे निरर्थक आवाज़ें ही निकालते हैं। बाइबल में केवल यही एक पद है जिसमें शब्द ''भाषाओं'' को परिभाषित किया गया है और इसका सीधा अर्थ उस समय की स्थानीय प्रचलित भाषा था, न कि कोई निरर्थक वाक्यांश। नये नियम में जहां भी चमत्कारी ढंग से भाषाएं बोलने का उल्लेख मिलता है, वहां ''बोली का अर्थ भाषा'' आसानी से समझा जा सकता है। [15]स्तिफनुस के प्रेरितों 7 वाले प्रवचन का यह पहला भाग हमें विषय-वस्तु की जानकारी दे सकता है। [16]इस पर और अधिक जानकारी शब्दावली से ''कलीसिया'' और ''राज्य'' और ''राज्य/कलीसिया की स्थापना'' पर लेख में मिल सकती है। [17]यह प्रमाणित करने के लिए कि 120 ने ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, यह तर्क दिया जाता है कि योएल 2 अध्याय में स्त्रियों का उल्लेख है (प्रेरितों 2:17, 18) और प्रेरितों में कोई भी महिला नहीं थी। परन्तु, इस बात का कोई संकेत नहीं है कि पतरस के कहने का अर्थ यह हो कि जो कुछ उसने योएल 2:38-32 से उद्धृत किया, वह उसी दिन पूरा होना था। उदाहरण के लिए, उस दिन न तो किसी ने दर्शन देखा और न ही स्पप्न। परन्तु यह सत्य है कि पिन्तेकुस्त का दिन योएल 2 अध्याय के वायदों के पूरा होने का आरम्भ था। बाद में स्त्रियों को भी चमत्कारी शक्तियां प्राप्त होनी थीं (21:8, 9)। [18]जैसे हमने प्रेरितों 1 अध्याय में देखा था, निश्चित ही मारथा, मरियम और लाज़र और यहूदिया के अन्य लोग भी प्रेरितों के साथ आ मिले होंगे। [19]स्तिफनुस ने 7:47 में मन्दिर को ''घर'' कहा। कइयों का कहना है कि किसी भी हालत में मन्दिर को घर *नहीं* कहा जा सकता। उनका कहना है कि मन्दिर को ''घर'' कभी नहीं कहा गया, जो कि सत्य नहीं है (7:47)। वे कहते हैं कि प्रेरितों को मन्दिर में *बैठने* की अनुमति नहीं मिल सकती थी, जो कि सत्य नहीं है। वे अन्यजातियों के लिए बने आंगन में एक ओर बैठ सकते थे। जब यीशु मन्दिर में गया तो ''वह *बैठकर* उन्हें उपदेश देने लगा'' (यूहन्ना 8:2)। यदि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा तब मिला होता जब वे अटारी में थे, तो प्रेरितों के काम के दृश्य को समझना कुछ कठिन हो जाता: प्रेरितों को वहां से चलकर मन्दिर की ओर जाना पड़ता (इतनी भीड़ के लिए पर्याप्त स्थान केवल यहीं था) - जो कुछ वहां हुआ था, उसके बारे में और लोगों को भी पता चलना था। दूसरी ओर यदि 2:1-4 वाली घटना अन्यजातियों के आंगन *में* घटी, तो दृश्य को आसानी से समझा जा सकता है। आत्मा से परिपूर्ण प्रचारक उस भीड़ में प्रचार करने वाले थे, जो *बहुत* ''घबराई हुई, हैरान और परेशान'' थी। [20]आज हम इधर-उधर देखकर कहते हैं ''लाउड स्पीकर कहां है?'' परन्तु उस ज़माने में लाउड स्पीकर नहीं थे।

[21]जो जोखिम उन्होंने उठाया, वह कोई समर्पित व्यक्ति ही उठा सकता था,और केवल समर्पित व्यक्ति ही सुसमाचार के प्रचार को मान सकता था। [22]संसार भर से बहुत से समर्पित यहूदी सेवानिवृत्ति के बाद पक्के तौर पर रहने के लिए यरूशलेम में आ जाते थे, परन्तु त्यौहार के इस दिन प्रत्येक देश ''के रहने वाले'' यहूदी प्रवासी का अर्थ सम्भवत: उनके अस्थायी निवास से है। [23]''शब्द हुआ'' को प्रेरितों द्वारा बोली गई भाषा के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। [24]आयत 9 से 11 तक पन्द्रह देशों के नामों की सूची है, परन्तु ये तो केवल उनके प्रतिनिधि हैं। आयत 5 में बताया गया है कि आकाश के नीचे हर एक जाति/देश में यहूदी लोग रहते थे। [25]जब रात को यीशु के मुकदमे के दौरान पतरस आंगन में प्रतीक्षा कर रहा था, तो हर किसी को पता था कि वह गलीली है (मरकुस 14:70; लूका 22:59), क्योंकि ''उसकी बोली उसकी पहचान हो गई'' थी (देखिए मत्ती 26:73)। संयोग से, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि प्रेरितों ने एक लहज़े में कई भाषाएं बोलीं। [26]यहां यूनानी शब्द का अनुवाद ''भाषा'' वही शब्द है जिससे हमें ''स्थानीय भाषा'' शब्द मिला है। [27]यह समझ आ जाना चाहिए कि यह ''सुनने का नहीं बल्कि बोलने का आश्चर्यकर्म'' था। अपनी इस बात को रखने के लिए कि बोलियां बोलने की योग्यता वे अस्पष्ट आवाज़ें ही थीं, कई लोग कहते हैं कि प्रेरितों 2 में *दूसरा* आश्चर्यकर्म सुनने वालों द्वारा बड़बड़ को समझ पाना था, परन्तु वायदा तो केवल *एक* ही था, और वह प्रेरितों के साथ था; और पवित्र आत्मा का उंडेलना भी एक बार हुआ और वह भी प्रेरितों पर ही। [28]अरामी भाषा को इब्रानी से अलग माना जाता था। पुराने समय की इब्रानी भाषा के बजाय, औसतन यहूदी अरामी भाषा ही बोलते थे। जो कि उपासना में प्रयुक्त होती है। [29]*कोयनि* का अर्थ है ''साधारण''। यह जन-साधारण की भाषा थी। नया नियम कोयनि यूनानी में लिखा गया था। [30]शब्दावली में देखिए ''यहूदी मत धारण करने वाले।'' रोम में यहूदियों की बहुत बड़ी जनसंख्या थी, और इनमें प्रचार करने की क्षमता थी। इन्होंने अन्यजातियों में से बहुतों को परिवर्तित किया, और उनको यहूदी मत में लाए थे।

[31]कई लोग जो बोलियां बोलने का दावा करते हैं, यह समझते हुए कि प्रेरितों 2 की ''भाषा'' का अर्थ वास्तविक भाषाएं है, ऐसे रुक-रुक बोलने लगते हैं जैसे हकला रहे हों। प्रेरित ऐसे *नहीं* बोले थे। यदि वे ऐसे बोलते तो सुनने वालों पर कुछ प्रमाणित न होता। परन्तु प्रेरितों ने बड़े प्रभावशाली ढंग से, स्पष्ट समझ में आने वाली अन्य भाषाओं में ''परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा'' की। [32]लूका ने जिन इलाकों की सूची दी है उनको जानने के लिए मानचित्र देखें। स्पष्टत: जब उसने पूर्व से आरम्भ करके पश्चिम की ओर रुख किया, और फिर अचानक पूर्व में ''अरबियों'' की ओर मुड़ आया तो उसके मन में कुछ उद्देश्य रहा होगा। दुर्भाग्य से, हमें नहीं मालूम कि वह उद्देश्य क्या था, और न ही यह कि उसने कुछ देशों की सूची क्यों दी जबकि कुछ को छोड़ दिया। हमें इतना मालूम है कि उसने अपने वाक्य में यह ज़ोर देकर कहा है कि ''आकाश के नीचे की हर एक जाति में से'' यहूदी लोग वहां आए हुए थे। [33]हमें सही-सही नहीं मालूम कि इन लोगों ने इस वाक्य का प्रयोग यहां क्यों किया। शायद उन्होंने घूमते हुए उस दृश्य को देखा और निष्कर्ष निकाल लिया कि प्रेरित किसी शराबी की तरह अनाप-शनाप बोल रहे हैं। यदि उन्होंने प्रेरितों को नशे में समझा, तो उसका एकमात्र कारण यही था कि उन्होंने पूरी तरह उन पर ध्यान नहीं दिया था। परन्तु, सम्भवत:, उन्हें पता था कि वहां वास्तविक भाषाएं बोली जा रही थीं और *फिर भी* उन्होंने उनके लिए अपमानजनक शब्द इस्तेमाल किए। संसार में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं है।